THRU the BIBLE



# याकूब का परिवार

**प्रार्थना के साथ शुरुआत करें**
**पढ़ें:** उत्पत्ति 29:30 - 31:6
**सुनें: THRU the BIBLE:** उत्पत्ति 29:30 - 31:6

प्रिय परमेश्वर,

आपका धन्यवाद कि आपकी कृपा हमारे प्रयासों से कहीं बढ़कर है। हमें यह समझने में मदद करें कि हमारे पास जो कुछ भी अच्छा है, वह आपकी ओर से है, न कि हमारी अपनी चतुराई से। हमें सिखाएं कि हम खुद को पूरी तरह आपके हाथों में सौंप दें और अपनी योजनाओं के बजाय आपकी दी हुई व्यवस्था पर भरोसा करें।

आमीन।

## याकूब के पुत्र

**उत्पत्ति 29:30 - 31:6**

चाहे उन्हें इसका एहसास हो या न हो, यह छोटा-सा परिवार बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण परिवारों में से एक बनने वाला था। **इन्हीं दो महिलाओं और उनकी दासियों से इस्राएल के 12 बेटे** (और आगे चलकर 12 गोत्र) पैदा होंगे। याकूब की पहली पत्नी, लिया, दुखी है क्योंकि वह जानती है कि याकूब उससे प्यार नहीं करता। उसे उम्मीद थी कि जब उसका पहला बेटा रूबेन पैदा होगा, तो याकूब का प्यार उसकी ओर मुड़ जाएगा। लेकिन वह सिर्फ़ राहेल से ही प्यार करता रहा।

रूबेन याकूब का पहिलौठा पुत्र था, परन्तु मसीह तक पहुँचने वाला वंश उसके द्वारा नहीं चला। **बल्कि, यह लिया का चौथा बेटा, यहूदा था, जिससे राजाओं की वंशावली शुरू हुई।** इसी वंशावली से दाऊद और बाद में स्वयं प्रभु यीशु आए। याजकीय गोत्र लेवी, लिआ के पुत्र, से आया। **याकूब लिआ से प्रेम नहीं करता था, फिर भी परमेश्वर ने उसे सम्मान दिया कि वह याकूब के कुछ सबसे महत्वपूर्ण पुत्रों की माता बनी।**



"याकूब लिआ से प्रेम नहीं करता था, फिर भी परमेश्वर ने उसे यह सम्मान दिया कि वह याकूब के कुछ महान पुत्रों की माता बने।"

इस बीच, राहेल गर्भवती नहीं हो पा रही थी। इससे वह लगभग निराश हो गई थी। **उन दिनों, अगर किसी महिला की कोई संतान नहीं होती थी, तो उसे अपमानित होना पड़ता था।** जितने ज़्यादा बच्चे होते थे, उसकी स्थिति उतनी ही बेहतर मानी जाती थी।

याकूब राहेल की निराशा से परेशान था, उसे लगा कि उसका प्यार उसके लिए काफी होना चाहिए। **लेकिन राहेल ने सुझाव दिया, जैसा सारा ने कई पीढ़ियों पहले किया था, कि याकूब उसकी दासी से बच्चे पैदा करे।** (परमेश्वर ने तब इसे स्वीकार नहीं किया था; वह अब भी इसे स्वीकार नहीं करता।) निश्चय ही, इस कदम से केवल परेशानी ही उत्पन्न हुई।

याकूब का घर बच्चों से भरता जा रहा था। राहेल की दासी से दो बेटे हुए, लेआह की दासी से दो बेटे हुए, और फिर लेआह के भी दो बेटे हुए।

फिर **"परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली...उसकी कोख खोली।"**(उत्पत्ति 30:22)।
उसका एक बेटा हुआ और उसने **उसका नाम यूसुफ़ रखा।** बाद में उसने **बिन्यामीन** को भी जन्म दिया।

**याकूब के कुल बारह बेटे थे - उन्हीं से इस्राएल के बारह गोत्र बने और अंततः इस्राएल राष्ट्र का निर्माण हुआ।**

## यहाँ याकूब के बच्चों की सूची है।

| **लिआ से जन्मे** | **बिल्हा से जन्मे, राहेल की दासी** | **जिल्पा से जन्मे, लिया की दासी** | **राहेल से जन्मे** |
|---|---|---|---|
| 1. रूबेन<br>2. शिमोन<br>3. लेवी<br>4. यहूदा<br>5. इस्साकार<br>6. जबूलून<br>7. दीना (बेटी) | 1. दान<br>2. नफ्ताली | 1. गाद<br>2. आशेर | 1. यूसुफ़<br>2. बिन्यामीन |

# याकूब का परिवार जाने की तैयारी करता है

जब याकूब ने आख़िरकार **लाबान को छोड़कर अपने परिवार के लिए अलग घर बसाने की हिम्मत जुटाई,** तो उसने लाबान से उन्हें जाने देने के लिए कहा। उसने लाबान की काफ़ी समय तक सेवा की थी। लेकिन लाबान अभी उन्हें जाने नहीं देना चाहता था। **उसने देखा था कि कैसे परमेश्वर ने याकूब की वजह से उन्हें और उसे भी आशीष दी थी, और वह उन्हें जाने नहीं देना चाहता था। वह कहता है, "मेरे बेटे, इतनी जल्दी मत जा! तेरी वजह से मुझे आशीष मिली है। क्यों न मैं तेरी  मज़दूरी बढ़ा दूँ?"**

याकूब को अब तक यह पता चल गया था कि जब भी मामा लाबान कोई सौदा करते, तो जीत उन्हीं की होती थी। **याकूब ने यह बात समझ ली थी और उसने शिकायत की कि अपनी मेहनत के बदले उसके पास दो पत्नियाँ और लड़कों से भरा घर होने के अलावा और कुछ नहीं है।** वह कहता है, "परमेश्वर ने आप पर कृपा की है और आपको खूब तरक्की दी है, लेकिन मेरे पास कुछ भी नहीं है।" तब लाबान ने कहा, "ठीक है, चल एक सौदा करते हैं।"



# लाबान के साथ याकूब की समझदारी भरी बातचीत

हमेशा रणनीति बनाने वाले याकूब ने **उससे कहा कि वह उसे सभी चितकबरी और धब्बेदार गाय-बैल, भूरी भेड़ें और धब्बेदार व चितकबरी बकरियाँ दे दे।** यह काफ़ी भुगतान होगा। दूसरे शब्दों में, शुद्ध नस्ल वाले जानवर लाबान के होंगे, लेकिन अलग नस्ल वाले याकूब के होंगे।

याकूब ने कहा, **"बस ये मुझे दे दो, यही मेरी मज़दूरी होगी।"** लाबान को यह सौदा काफ़ी अच्छा लगा। पशुओं पर लगे निशान से पता चल जाता कि कौन-सा जानवर किसका है। इसलिए लाबान इसके लिए मान गया। **याकूब ने अलग तरह के जानवरों को अलग कर दिया ताकि सिर्फ़ एक ही नस्ल के जानवर आपस में मिलें और बच्चे पैदा करें, और वे बच्चे लाबान के हों।** बाकी जानवर याकूब के हो जाएँगे।

याकूब ने एक दिलचस्प सौदा किया। लाबान ने जानवरों को दो समूहों में बाँट दिया। उसने दोनों झुंडों के बीच तीन दिन की यात्रा जितनी दूरी भी रखी। **लाबान का बेटा एक झुंड की देखभाल करता था और याकूब दूसरे झुंड की। फिर याकूब ने कुछ ऐसा किया जिससे उसे लगा कि उसके झुंड में और ज़्यादा चितकबरी, धब्बेदार या काली भेड़ें और बकरियाँ पैदा होंगी, और इस तरह उसने अपने झुंड को बढ़ाया।**

# याकूब के आत्मनिर्भरता के बीच परमेश्वर का अनुग्रह

याकूब **ने समझदारी दिखाई, चाहे वह जानवरों के बारे में उसकी अपनी जानकारी से हो या फिर परमेश्वर से मिली जानकारी से।** हो सकता है कि उसे आनुवंशिकता के नियमों की समझ न रही हो, लेकिन उसने वही किया जो उसे सही लगा, और परमेश्वर ने उसे आशीष दी। **याकूब समझदार था या बस अंदाज़ा लगा रहा था, उसके युक्ति की सफलता असल में परमेश्वर की ही देन थी।** याकूब बहुत चालाकियाँ करता था, लेकिन परमेश्वर ने उसे उन चालाकियों की वजह से नहीं, बल्कि उनके बावजूद आशीष दी।

परमेश्वर ने याकूब पर आशीष दी और **उसे बहुत समृद्ध बनाया।** उसके पास और भी नौकर, ऊँट और गधे हो गए, साथ ही भेड़ों और बकरियों के बड़े झुंड भी। ऊँट दुर्लभ थे और केवल अमीरों के पास ही होते थे, लेकिन याकूब के पास बहुत सारे ऊँट थे। परमेश्वर ने उसे अपनी मेहनत से अमीर बनने दिया। **अगर याकूब ने खुद को परमेश्वर की देखरेख में सौंपा होता, तो शायद परमेश्वर उसे और भी बहुत कुछ देता।** लेकिन अपनी ज़िंदगी के इस पड़ाव पर, याकूब परमेश्वर के बजाय खुद पर ज़्यादा भरोसा करता था।



“चाहे याकूब समझदार था या अंदाज़ा लगा रहा था, उसके योजना की कामयाबी असल में परमेश्वर की ही देन थी।”

# परमेश्वर के अनन्त सत्य

## उत्पत्ति 30 से हमारे लिए सीख

### हमारे आत्मनिर्भर होने के बावजूद परमेश्वर का अनुग्रह काम करता है

याकूब चालाकियों और चतुर युक्तियों से भरा हुआ व्यक्ति था। वह लगातार परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने का प्रयास करता था, जैसे कि झुंडों के प्रजनन के मामले में। परन्तु सत्य यह है कि **परमेश्वर ने याकूब को उसके चालाकियों के कारण नहीं, बल्कि उसके बावजूद आशीष दी। याकूब की असली कामयाबी और दौलत परमेश्वर की वजह से मिली थी, जो उसके अनुग्रह और वादों का नतीजा थी (इफिसियों 2:8-9)**। अगर याकूब खुद पर भरोसा करने के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करता, तो शायद परमेश्वर उसे और भी बहुत कुछ देता।



# मनन के लिए प्रश्न

**सवाल 1**

**आत्मनिर्भरता पर मनन: आपके जीवन में ऐसा कौन-सा क्षेत्र है जहाँ आप वर्तमान में परमेश्वर की व्यवस्था पर भरोसा करने के बजाय अपनी ही योजनाओं या चालाकियों पर अधिक निर्भर हैं? क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि आपकी सफलता का स्रोत परमेश्वर का अनुग्रह है, या आप अपनी सफलताओं का श्रेय स्वयं को देते हैं?**

**सवाल 2**

**अनदेखी विश्वासयोग्यता:लिआ से याकूब प्रेम नहीं करता था, लेकिन परमेश्वर ने उसे बहुत सम्मान दिया। क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जहाँ आपको लगता है कि आपको नज़रअंदाज़ किया जा रहा है या आपकी कद्र नहीं की जा रही है? लिया की कहानी आपको यह भरोसा रखने के लिए कैसे हिम्मत देती है कि जब लोग विश्वासयोग्यता को नहीं देखते या उसकी कद्र नहीं करते, तब भी परमेश्वर उसे देखता है और उसका सम्मान करता है?**

**सवाल 3**

**नियंत्रण को समर्पित करना: आज ऐसी कौन-सी एक विशेष परिस्थिति है जिसमें आपको अपनी सामर्थ्य के भरोसे प्रयास करना छोड़कर स्वयं को पूरी तरह परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए, इस विश्वास के साथ कि उसके अनुग्रह के द्वारा की गई व्यवस्था आपके लिए पूरी तरह पर्याप्त होगी?**

THRU the BIBLE

# हमारे रिसोर्स का इस्तेमाल करें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें और 200 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें।

Visit ttb.bible

हमारी वेबसाइट पर 'स्क्रिप्चर एंगेजमेंट' बुक सीरीज़ के और भी वॉल्यूम वाली इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप बुक देखें।

Visit ttbsa.org